



हुज़ूर ताजुशशारिया

दाई-ए-अरबो अजम

मुफ्ती गुलाम जिलानी अज़हरी (खलीफ़ा-ए-ताजुशशारिया)



फेहरिस्त

विलादत	2
नस्ब नामा	2
जिरयाने शराफत का ज़रा ये चश्मा भी देखें	2
तालीम	3
दावती सफ़र	3
हुजुर ताजुशशारिया मिस्र में	3
हुजुर ताजुशशारिया साहिबे इल्मे लददुनी थे	4
हुजुर ताजुशशारिया कि हक़ गोई	5
हुजुर ताजुशशारिया का तबाहुरे इल्मी	6
दखुले क़ाबा पर ऐतेराज़ और उसका जवाब	6
हुजुर ताजुशशारिया वली हैं (दो आलिम का इल्मी मुबाहसा)	7
हुजुर ताजुशशारिया का तक्वा	8
विसाले पुर मलाल	10

हिन्दुस्तान की मोअतबर तारीख, तारिखे फ़रिश्ता में है कि निज़ामे दुनिया चलाने के लिए बयक वक़्त 315 औलिया किराम मौजूद होते हैं (तारिखे फ़रिश्ता)। मैं समझता हूँ उन्हीं में से एक हुजुर ताजुशशारिया अलैहीर्रहमा है।

विलादत

आपकी पैदाइश 24 ज़िल कादा 1362 हि. मुताबिक 23 नवम्बर 1943 में मोहल्ला सौदागिरान बरेली शरीफ़ में हुई। (हवाला ताजुशशारिया एक जामेअ कलामात शख़्सियत)

आप पैदाइशी खुशनसीब थे इसलिए मशियत ने आपको इल्मी नस्बी व हस्बी घराने में जलवगर किया। आपके रगों में सिर्फ़ आला हज़रत का खून ही नहीं बल्के मसामे जिस्म का पसीना भी उलूमे रज़विय्या कि खुशबू लेकर बहार आता है।

नस्ब नामा

हुजुर ताजुशशारिया का सिलसिला-ए-नसब आला हज़रत को दादा व नाना बनाते हुए सहाबी-ए-रसूल केस मलिक अब्दुल रशीद तक पहुंचता हैं।

अल्लामा अख़तर रज़ा खाँ अज़हरी बिन इब्राहीम रज़ा खाँ बिन हामिद रज़ा खाँ बिन इमाम अहमद रज़ा खाँ (आला हज़रत) बिन इमाम नकी अली खाँ बिन इमाम रज़ा अली खाँ बिन मौलाना काज़िम अली खाँ बिन मौलाना शाह मोहम्मद आज़म खाँ बिन मौलाना मोहम्मद साअदत यार खाँ बिन शुजाअत जंग मोहम्मद सईदुल्लाह खाँ बहादुर कन्धारी बिन अब्दुल रेहमान खाँ कन्धारी बिन युसुफ़ खाँ बिन दौलत खान बिन बादल खाँ बिन दाउद खाँ बिन बर्हेच खाँ बिन शर्फ़ुद्दीन बिन इब्राहीम बिन सय्यिदुना केस मलिक अब्दुल रशीद सहाबी-ए-रसूल। [तहक़ीक़ शेख़ अबु मोहम्मद अब्दुल हादी अल कादरी, इमाम अहमद रज़ा अकेडमी डर्बन साउथ अफ़्रीका]

हुजुर ताजुशशारिया, आला हज़रत की तीसरी और सहाबी-ए-रसूल की 18वीं नस्ल है।

जिरयाने शराफ़त का ज़रा ये चश्मा भी देखें।

आपके अबाव अज्दाद में दो इब्राहीम हैं, एक आपके वालिद साहब दूसरे सय्यिदुना केस मलिक अब्दुल रशीद के बेटे और ये दोनों इब्राहीम सदका हैं सबसे बड़े इब्राहीम यानी हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के जिनके बेटे हैं हज़रते इस्माइल (अलैहिस्सलाम) है इसलिए हुजुर ताजुशशारिया का खानदानी नाम इस्माइल रज़ा है।

तालीम

इब्तिदाई तालीम बरेली शरीफ में हासिल की और आला तालीम के लिए 1963 में जामेअ अज़हर मिस्र तशरीफ ले गये। यहाँ तीन साल तक "कुल्लिया उसुलुद्दीन" में रहकर तालीम हासिल कमाल इल्म हासिल किया। (ताजुशशारिया एक जामेअ कलामात शख्सियत)

ये दुनिया की सबसे कदीम इस्लामीक युनिवर्सिटी है जहाँ के पढ़ने वाले अपने आपको अज़हरी लिखने पर फ़ख़्र मेहसूस करते हैं। मगर 4 मई 2009 में, मे खुद जामेअ अज़हर में ज़ेरे तालीम था। कुल्लिया दाअवह के ए.सी हाल में प्रोग्राम हुवा जिसके बाद आपको अददीरूल फ़ख़्री नाम की चादर उड़ाकर शेख-उल-अज़हर मोहम्मद सय्यद तनतावी (अलैहीर्रहमा) ने फ़ख़रे अज़हर का अवार्ड दिया। जब से दुनिया-ए-सुन्नीयत हुजुर ताजुशशारिया को फ़ख़रे अज़हर के नाम से भी याद करने लगी।

दावती सफ़र

खानवादे रज़ा में सबसे ज़्यादा आपने सफ़र फ़रमाया। तमाम अस्फ़ार में एक मक़सद मुशतरक था "मसलके आला हज़रत का ताअरुफ़"। हुजुर ताजुशशारिया का सफ़र चाहे मुरीद करने के लिए हो या निकाह पढ़ाने के लिए, मुनाज़रा के लिए हो या जलसा व कॉन्फ़्रेंस के लिए ये ज़रूर इरशाद फ़रमाते थे कि मसलके आला हज़रत ही सच्चा मज़हब हैं।

शाम, यमन, इराक, तुर्की, अफ़्रीका, साऊदी, दुबई, मॉरिशस, लंदन, पाकिस्तान और श्रीलंका वगैरह की ज़मीन ने बारहा आपकी कदम बोसी की हैं।

हुजुर ताजुशशारिया मिस्र में

4 मई 2009 की बात है जब तलबा-ए-मिस्र में ये ख़बर मशहूर हो गई कि कल हज़रत की तक़रीर होगी। ये प्रोग्राम कुल्लिया दाअवह के ए.सी हाल में था। जब में जलसा गाह में गया तो एक पोस्टर पर नज़र पड़ी जो दिवार पर चिपका हुआ था जिस में लिखा था "मम्नूअ तस्वीर" यानी हुजुर ताजुशशारिया की ज़ात आज भी तस्वीर की हुर्मत के काइल है। लेहाज़ा कोई साहब फ़ोटो ना ले। मगर हुस्न को देख कर कौन आशिक़ बेकाबू नहीं होता। जुहीं हज़रत प्रोग्राम हाल में तशरीफ़ लाये तलबा ने फ़ोटो लेना शुरू कर दिया, फ़ौरन नक़िबे जलसा ने ऐलान किया-

ایہا المتعلمون لاتتصوخوا فان التصویر عند الشیخ حتی الآن حرام۔

"बराए मेहरबानी आप लोग फ़ोटो ना ले क्योंकि हुजुर ताजुशशारिया के यहा तस्वीर कशी हाराम हैं"।

ये ऐलान सुन कर तलबा-ए-अज़हर रुक गए। दाय बाय कुर्सीयो पर अज़हर युनिवर्सिटी के बड़े-बड़े मुफ्ती और डॉक्टर बैठे हुए थे। बीच वाली कुर्सी हुजुर ताजुशशारिया के लिए खाली थी। आप निहायत ही आलिमाना वक़ार दाअय्याना शानो शोक्त के साथ जलवा अफ़रोज़ होते हैं। फुसाहे मिस्र और उलमा-ए-अज़हर की मौजूदगी में फसी-उल-बरीग़ अरबी ज़बान में तक़रीर फ़रमाते हैं। मे इस सोच में गर्क हो गया कि इनकी अरबी दानी का ये हाल हैं तो आला हज़रत की अरबी का क्या हाल होगा। वहा अखीर में हुजुर ताजुशशारिया से एक सुवाल हुआ।

ماذا الفرقة البريلوية
"बरेलवी किसको कहते हैं ?"

हुजुर ताजुशशारिया फ़रमाते हैं :

نحن قاديون مشربا وماتريديون عقيدة وحنفيون مذهبيا والمخالفون يقولون لنا البريلوية كما يقال اهل السنة والجماعة الصوفية في حجاز و دمشق و مصر

“मशरब के हिसाब से हम लोग क़ादरी है अक़ीदा के हिसाब से हम लोग मातुरिदी है और मज़हब के एतेबार से हम हनफ़ी हैं हमारे मुखालिफ़ीन हम को बरेलवी कहते हैं जैसे हिजाज़, दमिश्क़ और मिस्र में अहले सुन्नत वल जमात को मुखालिफ़ीन सूफ़ी कहते हैं।” (सुब्हानअल्लाह)

ये थे हमारे पीरो मुर्शीद हुजुर ताजुशशारिया।

"बरेलवी" नाम मुखालिफ़ीन का दिया हुआ है। ये हम ने अक्वलन अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही, साबिक प्रिंसिपल, अल जामियत-उल-अशरफ़िया, मुबारकपुर से सुन रखा था। मगर हिजाज़ वगैरह में अहले सुन्नत को सूफ़ी कहते हैं ये सुन कर इल्म में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ।

हुजुर ताजुशशारिया साहिबे इल्मे लददुनी थे।

ये भी मिस्र कि बात है 2009 में मैंने मर्कज़-ए-फज़्र जोड़न किया। ये काहिरा में सलफ़ियो का अरबी कोचिंग सेन्टर हैं। कुर्ता पायजामा देख सलफ़ी टिचर समझ गया कि गुलाम जिलानी सूफ़ी है।

يا غلام هل لديك رجل صاحب العلم اللدني : सलफ़ी टिचर ने कहा :
(ऐ गुलाम जिलानी ! तुम्हारी नज़र में कोई ऐसा आदमी है जिसके पास इल्मे लददुनी हो।)

मैंने कहा : نعم (हाँ है ना।)

सलफ़ी टिचर ने कहा : من هو (वो कौन हैं ?)

मैंने कहा : کان هو اختر رضا من علماء الازهر الشريف (वो अखतर रज़ा अज़हरी हैं।)

सलफ़ी टिचर ने कहा : तुम्हें कैसे पता चला ?

मैंने कहा : قلت :كان يخطب في بلاد الغرب باللغة الاردية فقال الناس :

We cannot understand Urdu language please speak in English

فكر شيئاً ثم بدأ خطابه فيخطب باللغة الانجليزية فصيحاً بليغاً فهذا يدل على انه صاحب العلم الدني

(वो वेस्टर्न कॉन्ट्री में उर्दू में तक़रीर फ़रमा रहे थे। पब्लिक ने कहा शैख हम उर्दू नहीं समझते हैं। प्लीज़ इंग्लीश में तक़रीर फ़रमाए। हुज़ुर ताजुशशारिया ने थोड़ी देर गौर ओ फ़िख़ किया उसके बाद फ़सी-उल-बरीग़ इंग्लीश में तक़रीर फ़रमाई। ये इस बात कि दलील है हुज़ुर ताजुशशारिया के पास इल्मे लद्दुनी हैं।)

सलफ़ी टिचर ने कहा : ممكن هو اخذ لغة انجليزية (हो सकता है उन्होंने इंग्लीश पढ़ा हो।)

मैंने कहा : لم يخطب قط قبل هذا مثله - (इससे पहले कभी इस अंदाज़ से तक़रीर नहीं फ़रमाई।) किसी भी जुबान का पढ़ना और है और बोलना और है। अचानक इस तरह तक़रीर फ़रमाना ये इल्मे लद्दुनी को बताता है। ये सुन कर वो सलफ़ी टिचर खामोश हो गया।

हुज़ुर ताजुशशारिया कि हक़ गोई

पोरबन्दर (गुजरात) में आप अक्सर दौरा फ़रमाते थे। मेरी नज़्म में गुजरात का वाहिद ऐसा शहर है पोरबन्दर जहाँ के बाशिंदे सबके सब सुन्नी हैं। 2000 से 2003 ईस्वी तक नाचीज़ खुद दारुल उलूम गौसे आज़म में अपने मुशफ़िक़ उस्ताद मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा (अलैही रेहमा) कि मौजूदगी में ज़ेरे तालीम था। मुझे कुछ मोअतबर लोगो ने बताया जो जलसा में मौजूद थे की जलसा शबाब पर था दौराने तक़रीर एक मुक़र्रीर ने कहा अशरफ़ीया मुबारकपुर सुलहकुल्लीयो का हो चुका है वहा अब चंदा न दे।

जब हुज़ुर ताजुशशारिया ने खिताब फ़रमाना शुरू किया तो अल्ल ऐलान फ़रमाया : "अशरफ़ीया कल भी हमारा था, आज भी हमारा है, और कल भी हमारा रहेगा, इन्शाअल्लाह" (सुब्हानअल्लाह)

ऐसी ही मुंबई में एक तक़रीर के दौरान एक ख़तीबे मिल्लत ने कहा असली सय्यद वो है जिनके रगो के खून से आला हज़रत की मुहब्बत की बू आती हो। जब हुज़ुर ताजुशशारिया के पास माईक आया तो आपने फ़रमाया, इन्होने (ख़तीबे मिल्लत) जो कहा इसके ज़िम्मेदार ये खुद हैं मे इससे बरी हूँ।

ये अल्लाह का खुसूसी फ़ज़ल था हुजुर ताजुशशारिया पर कि आखिरी उम्र तक आपकी मौजूदगी मे कोई खिलाफ़े शरअ करके आपकी खामोशी को रज़ा का नाम देकर गलत फ़ायदा नहीं उठा पाता था।

हुजुर ताजुशशारिया का तबाहुरे इल्मी

तक़रीबन 2016 ईस्वी मे बरेलवी शरीफ़ मे सेमिनार चल रहा था। हिन्दुस्तान के अजिल्ला उलामा बशमूल मोहददिसे कबीर अल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा (दामाज़िल्लाहु अलैना), अल्लामा आशिक-उर-रेहमान और मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा अमजदी घुसी।

आसमाने बरेलवी के इल्मी उफ़ुक़ पर जगमगा रहे थे। उलामा के चेहरे की ज़ियारत भी इबादत है इसी मक़सद के लिए उसी सेमिनार मे नाचीज़ भी मौजूद था।

फ़ैसला कि कॉपी हुजुर मोहददिसे कबीर के हाथ मे थी। मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा साहब एक इश्काल पेश फ़रमा रहे थे कि ऐसा काफ़िर जो ज़िम्मी हो न मुस्तामिन। उस पर हुजुर मोहददिसे कबीर ने फ़रमाया हर्बी काफ़िर जो ज़िम्मी हो न मुस्तामिन वो हर्बी है। मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा साहब ने अर्ज़ किया उस पर हर्बी कि तारीफ़ सादिक़ नहीं आ रही हैं। अब हुजुर ताजुशशारिया का तबाहुरे इल्मी देखे।

हुजुर ताजुशशारिया फ़रमाते हैं – “ऐसे काफ़िर ग़ैर मुसलमानाने ज़माना हैं यानी ऐसे काफ़िर को जो न ज़िम्मी हो न मुस्तामिन न हर्बी उसे ग़ैर मुसलमानाने ज़माना कहते है।”

इसपर मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा साहब कुछ बोलना चाह रहे थे फिर खामोश हो गए शायद हर्बी की जगह ग़ैर मुसलमानाने ज़माना से उनका इश्काल दूर हो गया।

दखुले क़ाबा पर ऐतेराज़ और उसका जवाब

1 शाबान 1434 हिजरी मुताबिक 10 जून 2013 ईस्वी बरोज़ पीर 6:05 मिनट पर आप क़ाबा शरीफ़ के अंदर दाखिल हुए। मेरी नज़र मे 15वी सदी हिजरी की हिन्दुस्तान में ये वाहिद शख़्सियत है जिसे अल्लाह ने अपने घर का मेहमान बनाया।

बालासोर उड्डीसा में हर साल बड़ी धुम-धाम से यादे हुसैन कॉन्फ्रेंस मनाते हैं। 2015 में नाचीज़ उसका खुसूसी ख़तीब था। मेहमाने खुसूसी कि शक़ल मे मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा जामिआ अमजदीया घूसी, शोहरा में असद इक़बाल और राईस कौसर साहिबान थे।

हुजुरा-ए-खास मे नाचीज़ अपने उस्ताद मुफ़्ती आले मुस्तफ़ा से इल्मी इस्तेफ़ादा करते हुए अर्ज़ किया हुजुर ये बताए कि अभी कोई मुज्तहीद हैं या नहीं ? मुफ़्ती साहब ने फ़रमाया नहीं।

नाचीज़ ने कहा फिर सेमिनार में नये मसाइल पास हो रहे हैं वो क्या हैं? मुफ्ती साहब ने फ़रमाया ये मजमूई तौर पर इज्तिहादी फैसले हैं यानी मुफ्तीयो का मजमूआ मुज्तहीद है।

इसी दरमियान एक साहिब तशरीफ़ लाए और कहा कि कुछ लोग ये कह रहे हैं कि हुजुर ताजुशारिया का गुस्ते काबा के लिये जाना ये बदअक्कीदा की दावत कबुल करना हैं। इसका जवाब आप प्रोग्राम में दे।

मुफ्ती आले मुस्तफा साहब ने प्रोग्राम में जवाब देते हुए फ़रमाया: “कि ये हुक्मत का मामला हैं न की बदअक्कीदा से मुआलात और ऐसे मोक़े पर महज़ इक्तेसाबे फ़ैज़ मक्सुद होता है बैतुल्ला से बरकत हासिल करना मक्सुद होता है बेजा अकाबिरीन कि बुराई करना ये ग़ैर मुनासिब है।”

हुजुर ताजुशारिया वली हैं (दो आलिम का इल्मी मुबाहसा)

नाचीज़ उड्डीसा के ही एक उर्स में बहैसियते खतीब शामिल हुआ। वहा के एक मशहूर और मुनाज़िर सुन्नी आलिम दीन ने मेरे सामने एक मक़ाला पेश किया ये कहते हुवे कि आप इस पर ताईदी दस्ताख़त करे या फिर तबसरा करे।

मक़ाला में दाअवा ये था कि अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी वली नहीं हैं और दलील ये थी की कुरान शरीफ़ में है -

ان اولياء الا المتقون (انفال: ३४)

“वली नहीं हैं मगर परहेज़गार”

और चूँकि अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी परहेज़गार नहीं है क्योंकि वो अमीरो के यहा जाते हैं गरीबो के यहा नहीं जाते लिहाज़ा वली नहीं हो सकते हैं। नाचीज़ ने दस्ताख़त करने से इनकार कर दिया। तब मुनाज़िर साहब ने फ़रमाया फिर तबसरा करे। हम खुले ज़हन के हैं हक़ बात कबुल करते हैं।

नाचीज़ ने कहा, हुजुर ताजुशारिया इल्मन, अमलन, उम्मन व नसबन मुझ से अफ़ज़ल व आला हैं। मे कुछ न बोलू तो अफ़ज़ल हैं। मगर मुनाज़िर साहब न माने फिर इसरार किया आप या तो ताईद करे या तबसरा करे।

अब नाचीज़ ने बोला: “हुजुर आपका दावा है कि ताजुशारिया वली नहीं है और दलील है

ان اولياء الا المتقون (انفال: ३४)

“वली नहीं हैं मगर परहेज़गार”

कुरान शरीफ, सुरह बकराह, आयत न. 2 में है **ان اولياء المتقون** इस आयत के ज़िम्न में खज़ाईनुल इरफ़ान में मुताक़ियो कि 7 किस्मे की है।

- 1) कुफ़्र से बचना
- 2) बदमज़हबी से बचना
- 3) गुनाहे कबीरा से बचना
- 4) गुनाहे सगीरा से बचना
- 5) शुब्हात से बचना
- 6) शहवात से बचना
- 7) ग़ैर की तरफ़ इल्तेफ़ाक़ से बचना

(खज़ाईनुल इरफ़ान, सफ़ा न. 04)

हुजुर ये बताय **هذه للمتقين** मे जो मुताक़ि का लफ़ज़ आया है इससे आपने कौनसी किस्म मुराद ली हैं। अगर सातवी तो हम उनको छठवी के हिसाब से उनको वली मानते हैं अगर आप छठवी किस्म से ख़ारिज मानते है तो हम उनको पाँचवी के हिसाब से उनको वली मानते हैं और हुजुर ताजुशशारिया को काफ़िर तो आप भी नहीं मानते है। लिहाज़ा वो मुताक़ि कि पहली किस्म मे दाखिल और ये दलील आप ही ने पेश कि है **ان اولياء المتقون** “वली नहीं है मगर मुताक़ि” तो आप ही की पेशकर्दा आयत से साबित हुआ कि हुजुर ताजुशशारिया वली है।” चूँकि वो सुन्नी आलिम थे और नाचीज़ कि बात मुदल्लल थी इसलिए उन्होंने ने मान ली

بقوله تعالى انما يستجيب الذين يسمعون (انعام: ٣٦)

मानते वही है जो सुनते है (अनआम आयत न. 36)

हुजुर ताजुशशारिया का तक्वा

17 रजबुल मुरज्जब 1439 हि. मुताबिक 5 अप्रैल 2018 को बाद नमाज़े मगरिब उर्स तहसीने से 1 दिन पहले नाचीज़ अपने शैख हुजुर मोहददिसे कबीर कि माअय्यत मे काशाना-ए-हुजुर ताजुशशारिया फ़ाटक मोहल्ला सोदागरन बरेलवी शरीफ़ में हाज़िर हुआ।

मैंने अपनी सर कि आँखों से ये देखा कि हुजुर मोहददिसे कबीर ने निहायत ही आजिज़ी के साथ पीरो मुशीद हुजुर ताजुशशारिया कि दस्त बोसी की साथ ही शाहज़ादा-ए-ताजुशशारिया अल्लामा असजद मियाँ कि भी दस्त बोसी की। उस वक़्त नाचीज़ ने अपने शैख से ये सीखा कि पीर घराने का बच्चा-बच्चा भी काबिले ताज़ीम होता हैं। जबकि इससे चंद साल क़ब्ल जामिआ-तुर-रज़ा में मैंने ये देखा कि अल्लामा साहब हुजुर ताजुशशारिया कि ताज़ीम मे खड़े है और हुजुर ताजुशशारिया, अल्लामा साहब कि ताज़ीम मे खड़े हैं।

इससे बारगाहे ताजुशारिया में अल्लामा साहब की मक़बूलियत का अन्दाज़ा होता है। बहरहाल नमकिन और चाय से अल्लामा साहब के सदन में हमारी ज़्यादात हुई साथ में मौलाना अबु युसूफ अज़हरी भी थे। बाअदाहु मेरे शैख ने अल्लामा असजद मियाँ से नाचीज़ का ताअरुफ़ कराया और ख़िलाफ़त की दरख्वास्त की।

वो एक ऐसा लम्हा-ए-तहव्वुल था जहां से इंसान की ज़िन्दगी करवटे लेती है। मुझे ऐसा लग रहा था कि मे फ़ना और बका के दरमियान खड़ा हूँ। मेरी तकदीर लिबासे जिस्म में बाहर आने वाली थी। अल्लामा असजद मियाँ दरख्वास्त को हुजुर ताजुशारिया कि बारगाह में पेश करते हैं और हुजुर ताजुशारिया ने नाचीज़ के सर को ख़िलाफ़त व इजाज़त के ताज-ए-ज़री से मुज़य्यन कर दिया। वो शब मेरी ज़िन्दगी कि शबे मेराज थी। फिर उसके बाद नाचीज़ ने ये नहीं सुना कि हुजुर ताजुशारिया ने किसी को ख़िलाफ़त दी है। इस हैसियत से नाचीज़ हुजुर ताजुशारिया का आखिरी ख़ालिफ़ा है।

(فالحمد لله على ذلك)

ख़िलाफ़त कि रात इशा की नमाज़ हम लोगो ने हुजुर ताजुशारिया के काशाना पर ही अदा किया। आपने भी जमाअत के साथ नमाज़े इशा अदा फ़रमाई। जब अल्लामा असजद मियाँ जमाअत से नमाज़ पढ़ाने के लिये तशरीफ़ लाए तो हम ने ये अजीब मन्ज़र देखा कि हुजुर ताजुशारिया ने जमाअत खड़ी होने से पहले अल्लामा असजद मियाँ के चेहरे पर हाथ फ़ेरा ग़ालिबन आप ने अपने इत्मिनाने क़ल्ब के लिये ये किया।

बादे जमाअत हम लोग सुनन्नो नवाफ़िल में मशगुल हो गये जबकि हुजुर ताजुशारिया, अल्लामा असजद मिया की इक़तदा में नवाफ़िल भी जमाअत के साथ पढ़ रहे थे। मे सोच रहा था कि जो शरीअत के ताज है वो शरीअत के ख़िलाफ़ कैसे कर सकते हैं। अस्ल मसला जानने के लिए बेकरार था। जब अज़हरी गेस्ट हाऊस में मे अपने शैख हुजुर मोहददसे कबीर से दरयाफ़्त किया तो

आपने फ़रमाया : “तदाई के साथ नहीं न है” (यानी नफ़ल की जमाअत तदाई के साथ नाजाइज़ है और तदाई कि मिक्दार तीन से ज़्यादा है, और यहां तीन से कम थे।)

नाचीज़ ने ये बहस दर्से निज़ामी में ज़रूर पढ़ा था मगर अमली शक़ल में देखा नहीं था, मेरे शैख ने ये भी फ़रमाया अगर तुम लोग नहीं होते तो मे भी शरीके जमाअत हो जाता और बग़ैर तदाई के नफ़ल की जमाअत जाइज़ हैं।

ये था हुजुर ताजुशारिया का तक्वा। इस उम्र में जबकि तलफ़फ़ुज़ पर इंसान पुरी तरह क़ादीर नहीं होता है फिर भी उसकी इन्फ़िरादी नमाज़ हो जाती है। मगर क़िरातुल इमाम लहु-अल-

किरात के तहत इमाम की किरात से अपनी नमाज़ के फ़र्ज़ किरात को अदा करना ये तक्वा नहीं तो क्या हैं।

विसाले पुर मलाल

वाक़ेआ खिलाफ़त के ठीक 3 महीने 15 दिन बाद 6 ज़िल कादा 1439 हि. मुताबिक 20 जुलाई 2018 बरोज़े जुम्मा बाद नमाज़े मगरिब 7:50 मिनट पर हाफ़िज़ अबरार अहमद कादरी खतीब व इमाम मोहम्मद मस्जिद खंडवा का नम्दीदाह आंखे भराई अवाज़ मे फ़ोन आया की हुजुर ताजुशशारिया का इन्तिकाल हो गया है। انا لله وانا اليه راجعون

मैने फ़ोरन बरेली शरीफ़ फ़ोन लगाया तो पता चला हॉ अभी 15-20 मिनट पहले ही हुआ। इसके बाद पुरा हिन्दुस्तान जैसे मातम कुना हो। आला हज़रत के बाद मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द का कोई जवाब नहीं था और मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द के बाद हुजुर ताजुशशारिया का कोई जवाब नहीं है फिर भी हम ये दुआ करते है कि अल्लाह ताअला हमे हुजुर ताजुशशारिया का बदल अता फ़रमाए (आमिन)

फ़ाज़िले जामेअ अज़हर मिस्र
ख़ालिफ़ा-ए-हुजुर ताजुशशारिया
जामिआ सुन्निया नागचून, खंडवा, म.प्र
मोबाइल : 9009019530